Dr. Syama Prasad Mookerjee
Research Foundation

भविष्य के भारत का साक्षात्कार

Research Team

Abhay Singh
Research Associate
Dr Syama Prasad Mookerjee Research Foundation

Manujam Pandey
Dr Syama Prasad Mookerjee Research Foundation

Design

Ajit Kumar Singh
Dr Syama Prasad Mookerjee Research Foundation

Dr. Syama Prasad Mookerjee Research Foundation

विषय सूची

1	भूमिका	4
2	**प्रश्न – 1** प्रधानमंत्री जी जब चुनाव की तैयारी करते हैं... आज तक चैनल, एंकर – अंजना ओम कश्यप	5
3	**प्रश्न – 2** हम एक कार्यक्रम कर रहे मोदी जी।... न्यूज़ 18, एंकर – रुबिका लियाक़त	7
4	**प्रश्न – 3** विपक्षी दल एक नैरेटिव सेट करना चाह रहे हैं ... इंडिया टीवी, एंकर – मीनाक्षी जोशी	9
5	**प्रश्न – 4** अलग-अलग घाटों से हम होते हुए जा रहे हैं... आज तक, एंकर – चित्रा त्रिपाठी	10
6	**प्रश्न – 5** विपक्ष कह रहा है कि आप महंगाई पर, बेरोजगारी पर... आज तक, एंकर – हिमांशु मिश्रा	11
7	**प्रश्न – 6** फर्स्ट टाइम वोटर्स, यूथ वोटर आपका एक बहुत... इंडिया टीवी, एंकर - सौरभ शर्मा	13
8	**प्रश्न – 7** उत्तर से दक्षिण तक, पूरब से पश्चिम तक... न्यूज़ 18 इंडिया, एंकर – अमिश देवगन	14
9	**प्रश्न – 8** इस बार चुनाव पर राम मंदिर का कितना असर मानते हैं... दैनिक भास्कर, नेशनल एडिटर – नवनीत गुर्जर	15
10	**प्रश्न – 9** 2047 की बात आप कर रहे हैं... लोकमत मीडिया ग्रुप	16
11	**प्रश्न – 10** प्रधानमंत्री जी, बंगाल के विषय पर संदेशखाली ... रिपब्लिक भारत, एंकर – अर्नब गोस्वामी	17
12	**प्रश्न – 11** कांग्रेस और विपक्ष कह रहा है कि भाजपा ... दैनिक जागरण	18
13	**प्रश्न – 12** प्रधानमंत्री जी, इसमें कोई दो राय नहीं ... टाइम्स नाउ, एंकर – सुशांत सिन्हा	19
14	**प्रश्न – 13** प्रधानमंत्री जी, एक चीज को लेकर बड़ा भ्रम है ... टीवी – 9	20
15	**प्रश्न – 14** जैसे-जैसे भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार बढ़ता जा रहा है... टाइम्स ऑफ़ इंडिया	23
16	**प्रश्न – 15** 2014 और 2019 में बहुत डिसाइसिव विक्ट्री मिली आपको। ... एशियानेट न्यूज़	24
17	**प्रश्न – 16** आपने कई भाषणों में कहा है कि 2024 आपका लक्ष्य नहीं है... एएनआई, एंकर – स्मिता प्रकाश	26

भूमिका

लोकसभा चुनाव के मध्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विभिन्न समाचार पत्रों और टीवी चैनलों को साक्षात्कार दिया है. इन साक्षात्कारों में विभिन्न प्रकार के प्रश्न प्रधानमंत्री जी से पूछे गए जिसका पूर्ण आत्मविश्वास और बेबाक तरीके से जवाब भी दिया गया. यह प्रश्न प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की प्रगति से जुड़ी नीतियों और उनके कार्यान्वयन से संबंधित थे. ऐसे प्रश्न जिनसे आम जनमानस का सीधा जुड़ाव है अथवा वह इन प्रश्नों का जवाब जानना चाहते हैं. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भारत की जनता के साथ सीधा संवाद करते हैं.

भारतीय राजनीति के क्षितिज पर श्री नरेन्द्र मोदी जी के रूप में एक ऐसे व्यक्तित्व का उभार हुआ जिसने आमजन से सीधे जुड़ने की महत्ता को काफी पहले समझ लिया. जनता से सीधे और बेलाग संवाद की कला प्रधानमंत्री मोदी को दूसरे नेताओं से बिलकुल अलग बनाती है.

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की यह व्यापक सोच का परिणाम ही था कि उनके नेतृत्व में आकाशवाणी की लोकप्रियता 'मन की बात' कार्यक्रम के चलते खूब बढ़ी, और न सिर्फ लोकप्रियता बल्कि राजस्व में भी वृद्धि हुई.

इन बिन्दुओं की ओर हमने ध्यान दिया और इस बार के लोकसभा चुनावों के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से विभिन्न समाचार पत्रों/न्यूज़ चैनलों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का एक संक्षिप्त संकलन तैयार किया है.

हमें विश्वास है कि भविष्य में संवाद प्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के इन पहलुओं को समझने हेतु यह ई-बुकलेट एक दस्तावेज का कार्य करेगा.

डॉ अनिर्बान गांगुली

चेयरमैन - डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन,

नई दिल्ली

प्रश्न – 1

प्रधानमंत्री जी जब चुनाव की तैयारी करते हैं तो उम्मीदवारों की सूची बनाते हैं. हमारा स्टार प्रचारक कौन होगा, ये सब घोषणापत्र में तय है. लेकिन आपने अगले 100 दिन का एजेंडा बनाना शुरू कर दिया है. इसलिए मेरा आपसे पहला सवाल यह है कि जब आप 2014 में आए थे, तो 100 दिनों के भीतर आपने काले धन पर एसआईटी का गठन किया था। 2019 में जब आप आए तो 62वें दिन कश्मीर में तीन तलाक से आजादी लेकर आए और 66वें दिन कश्मीर में 370 से आजादी लेकर आए। अगर आप 2024 में सत्ता में आए तो 100 दिन में क्या करेंगे? आप कौन से बड़े और कड़े फैसले ले सकते हैं?

– अंजना ओम कश्यप
(आज तक चैनल, एंकर)

उत्तर

पहली बात ये है कि यह मुद्दा मुसलमान का नहीं है। इंडिविजुअल मुसलमान कितना ही मोदी के साथ होगा लेकिन एक निश्चित विचार प्रवाह है जो उनको आदेश करता है आप ये करो आप वो करो उसके आधार पर निर्णय करते हैं। जहां तक मोदी का सवाल है, तो मेरा जो घर है ना मेरे अगल बगल में सारे मुस्लिम परिवार हैं। तो हमारे घर में ईद भी मनती थी, हमारे घर में और भी त्यौहार होते थे। मेरे घर में ईद के दिन खुद का खाना नहीं पकता था। सारे मुस्लिम परिवारों से मेरे यहां खाना आ जाता था। मेरे घर से पांच कदम के बाद मुस्लिम परिवार है। जब मोहर्रम में ताजिया निकलता था, तो हमारा कंपलसरी होता था उससे नीचे से निकलो, जैसे परिक्रमा करते हैं मंदिर में। ताजिये के नीचे से निकलो, हमें सिखाया जाता था। तो मैं उस दुनिया से पला बढ़ा हूं। आज भी मेरे बहुत सारे दोस्त हैं। दूसरा 2002 के बाद मेरी छवि बहुत खराब कर दी गई गोधरा के बाद। मैंने सोचा भई जरा रियलिटी जाननी चाहिए। तो मैंने हमारे 30 कार्यकर्ताओं का, युवाओ का एक ट्रेनिंग कैंप किया उनको सर्वे करना सिखाया, सर्वे मतलब वो आंकड़ों वाला सर्वे नहीं, बातचीत कैसे करनी बात कैसे निकालनी। अहमदाबाद में एक माणिक चौक करके जगह है। वो माणिक चौक में शाम को लोग खाना खाने जाते हैं। वहां दिन में जो बिजनेस है, सारे व्यापारी हैं और खरीदार सारे हिंदू हैं बड़ा यूनिक मार्केट है। मतलब सारे व्यापारी मुसलमान हैं,सारे खरीदार हिंदू हैं। और वो इतनी भीड़ होती है जी पैदल

नहीं चल सकते। साइकिल को तो लेकर जाना इंपॉसिबल है। अब दीवाली में आप अंदर गए तो दो घंटे में निकल नहीं सकते। और हर प्रकार की चीजें बिकती है वहां। मैंने कहा मुझे उसी मार्केट में सर्वे करना है। वहां सर्वे करो तो मैंने लड़कों को भेजा और मैं डेली रिपोर्ट लेता था। वो पूछते थे कि आप बताइए दिवाली कैसी है। नहीं जी, दिवाली बहुत अच्छी है। ये मैं 2002 की बात कर रहा हूं। फिर वो कहता था उसको जरा चुभने के लिए। फिर वो कहता था मोदी बड़ा यार दिवाली है। हे, मोदी का नाम मत लो। बच्चा होता था उनका, बोले इसकी मां सुनेगी ना तो मुझे रात को खाना नहीं देगी। बोले क्यों, अरे बोली मोदी नहीं आया ना तब तक ये स्कूल नहीं जाता था। बोले मोदी आया तो स्कूल जा रहा है। ये दिवाली की छुट्टी है तो दुकान पर मेरी मदद कर रहा है। बोले पहले कभी दुकान पर नहीं आता था, मेरा सर फूट जाता था। बोले उसकी मां इतनी खुश है कि मेरे बच्चे सब उनका जीवन बन रहा है। तो बोले मोदी के खिलाफ मेरे पास मत बोलो। और करीब-करीब 90 परसेंट दुकान वालों का तर्क अलग-अलग होंगे, यही जवाब था। दूसरा मुझे कुछ मुस्लिम महिलाएं एक बार मिलने आई। तो बड़ी बधाई दे रही थी, कुछ अपेक्षा लेकर के आई थी। मैंने क्या बधाई, वो जोहापुरा की थी और जोहापुरा वो है जहां करीब तीन-चार लाख मुसलमान का गेटोज है। तो बोले हम वहां से आए है। मैंने कहा, कुछ तकलीफ है क्या, कोई पुलिस वाला कोई सरकार कुछ परेशान करती आपको क्या। नहीं नहीं बोले साब, हम तो आपका अभिनंदन करने आए हैं और कुछ काम लेके आए हैं। मैंने कहा बताइए, बोले आपने बिजली का काम किया न बहुत अच्छा किया। मैंने कहा- कहां वो को मैंने बहुत बुरा किया है। मैंने कहा मैंने 35 किलोमीटर केबल उस इलाके का 35 किलोमीटर केबल उखाड़ के फेंक दिया है और वहां कोई सरकारी आदमी नहीं जा पाता था। बोले साब, वही अच्छा काम किया है। मैंने कहा कैसे, मैंने तो बिजली काट दी, मैंने तो केबल काट दिए। बोले नहीं साहब आपका तो एक बिजली मंत्री है। हमारे यहां हर मोहल्ले में बिजली मंत्री है और बोले बिजली देकर के वो हमसे पेमेंट लेते थे। केबल उनके थे बोले सरकार की बिजली चोरी करके हमको बेचते थे और हमारे पैसे बहुत जाते थे। बोले अभी रेगुलर बिजली मिल रही है कोई हमें दादागिरी नहीं करता है, बोले इसलिए हम आए हैं। उस समय पहले मेरे पर अखबार में क्या आया, मोदी ने वहां पर जुल्म कर दिया, सारे केबल काट दिए, एक्चुअली मैंने उनका भला किया तो ऐसा मेरे जीवन में सैकड़ों घटना है लेकिन मैं इसका मार्केटिंग नहीं करता हूं। क्यों, मेरा पहले से मंत्र रहा है सबका साथ सबका विकास। मैं वोट बैंक के लिए काम नहीं करता हूं। और जो गलत है वो मैं गलत कह के रहूंगा।

प्रश्न – 2

हम एक कार्यक्रम कर रहे मोदी जी। न्यूज18 इंडिया का वो कार्यक्रम है मोदी वतन मुसलमान। हम ज्यादातर उन जगहों पर जाते हैं जहां पर मुस्लिम मतदाता भारी संख्या में हैं। पहले आलम अलग था और आज की तारीख में मैं आपको पूरी गंभीरता से और संजीदगी से कह सकती हूं कि ऐसे- ऐसे मुसलमान आगे आते हैं जो आपके लिए जान दे सकते हैं। और एक उनका वाक्य है ना दूरी है ना खाई है मोदी हमारा भाई है। बड़ा जोर शोर से ऐसे करते हुए नजर आते हैं। बावजूद उसके आप उस धारणा को तोड़ने में क्या नाकामयाब रहे हैं कि मोदी मुसलमानों का नहीं है।

– रुबिका लियाक़त
(न्यूज़ 18, एंकर)

उत्तर

पहली बात ये है कि यह मुद्दा मुसलमान का नहीं है। इंडिविजुअल मुसलमान कितना ही मोदी के साथ होगा लेकिन एक निश्चित विचार प्रवाह है जो उनको आदेश करता है आप ये करो आप वो करो उसके आधार पर निर्णय करते हैं। जहां तक मोदी का सवाल है, तो मेरा जो घर है ना मेरे अगल बगल में सारे मुस्लिम परिवार हैं। तो हमारे घर में ईद भी मनती थी, हमारे घर में और भी त्यौहार होते थे। मेरे घर में ईद के दिन खुद का खाना नहीं पकता था। सारे मुस्लिम परिवारों से मेरे यहां खाना आ जाता था। मेरे घर से पांच कदम के बाद मुस्लिम परिवार है। जब मोहर्रम में ताजिया

निकलता था, तो हमारा कंपलसरी होता था उससे नीचे से निकलो, जैसे परिक्रमा करते हैं मंदिर में। ताजिये के नीचे से निकलो, हमें सिखाया जाता था। तो मैं उस दुनिया से पला बढ़ा हूं। आज भी मेरे बहुत सारे दोस्त हैं। दूसरा 2002 के बाद मेरी छवि बहुत खराब कर दी गई गोधरा के बाद। मैंने सोचा भई जरा रियलिटी जाननी चाहिए। तो मैंने हमारे 30 कार्यकर्ताओं का, युवाओ का एक ट्रेनिंग कैंप किया उनको सर्वे करना सिखाया, सर्वे मतलब वो आंकड़ों वाला सर्वे नहीं, बातचीत कैसे करनी बात कैसे निकालनी। अहमदाबाद में एक माणिक चौक करके जगह है। वो माणिक चौक में शाम को लोग खाना खाने जाते हैं। वहां दिन में जो बिजनेस है, सारे व्यापारी हैं और खरीदार सारे हिंदू हैं बड़ा यूनिक मार्केट है। मतलब सारे व्यापारी मुसलमान हैं,सारे खरीदार हिंदू हैं। और वो इतनी भीड़ होती है जी पैदल नहीं चल सकते। साइकिल को तो लेकर जाना इंपॉसिबल है। अब दीवाली में आप अंदर गए तो दो घंटे में निकल नहीं सकते। और हर प्रकार की चीजें बिकती है वहां। मैंने कहा मुझे उसी मार्केट में सर्वे करना है। वहां सर्वे करो तो मैंने लड़कों को भेजा और मैं डेली रिपोर्ट लेता था। वो पूछते थे कि आप बताइए दिवाली कैसी है। नहीं जी, दिवाली बहुत अच्छी है। ये मैं 2002 की बात कर रहा हूं। फिर वो कहता था उसको जरा चुभने के लिए। फिर वो कहता था मोदी बड़ा यार दिवाली है। हे, मोदी का नाम मत लो। बच्चा होता था उनका, बोले इसकी मां सुनेगी ना तो मुझे रात को खाना नहीं देगी। बोले क्यों, अरे बोली मोदी नहीं आया ना तब तक ये स्कूल नहीं जाता था। बोले मोदी आया तो स्कूल जा रहा है। ये दिवाली की छुट्टी है तो दुकान पर मेरी मदद कर रहा है। बोले पहले कभी दुकान पर नहीं आता था, मेरा सर फूट जाता था। बोले उसकी मां इतनी खुश है कि मेरे बच्चे सब उनका जीवन बन रहा है। तो बोले मोदी के खिलाफ मेरे पास मत बोलो। और करीब-करीब 90 परसेंट दुकान वालों का तर्क अलग-अलग होंगे, यही जवाब था। दूसरा मुझे कुछ मुस्लिम महिलाएं एक बार मिलने आई। तो बड़ी बधाई दे रही थी, कुछ अपेक्षा लेकर के आई थी। मैंने क्या बधाई, वो जोहापुरा की थी और जोहापुरा वो है जहां करीब तीन-चार लाख मुसलमान का गेटोज है। तो बोले हम वहां से आए है। मैंने कहा, कुछ तकलीफ है क्या, कोई पुलिस वाला कोई सरकार कुछ परेशान करती आपको क्या। नहीं नहीं बोले साब, हम तो आपका अभिनंदन करने आए हैं और कुछ काम लेके आए हैं। मैंने कहा बताइए, बोले आपने बिजली का काम किया न बहुत अच्छा किया। मैंने कहा- कहां वो को मैंने बहुत बुरा किया है। मैंने कहा मैंने 35 किलोमीटर केबल उस इलाके का 35 किलोमीटर केबल उखाड़ के फेंक दिया है और वहां कोई सरकारी आदमी नहीं जा पाता था। बोले साब, वही अच्छा काम किया है। मैंने कहा कैसे, मैंने तो बिजली काट दी, मैंने तो केबल काट दिए। बोले नहीं साहब आपका तो एक बिजली मंत्री है। हमारे यहां हर मोहल्ले में बिजली मंत्री है और बोले बिजली देकर के वो हमसे पेमेंट लेते थे। केबल उनके थे बोले सरकार की बिजली चोरी करके हमको बेचते थे और हमारे पैसे बहुत जाते थे। बोले अभी रेगुलर बिजली मिल रही है कोई हमें दादागिरी नहीं करता है, बोले इसलिए हम आए हैं। उस समय पहले मेरे पर अखबार में क्या आया, मोदी ने वहां पर जुल्म कर दिया, सारे केबल काट दिए, एक्चुअली मैंने उनका भला किया तो ऐसा मेरे जीवन में सैकड़ों घटना है लेकिन मैं इसका मार्केटिंग नहीं करता हूं। क्यों, मेरा पहले से मंत्र रहा है सबका साथ सबका विकास। मैं वोट बैंक के लिए काम नहीं करता हूं। और जो गलत है वो मैं गलत कह के रहूंगा।

प्रश्न – 3

विपक्षी दल एक नैरेटिव सेट करना चाह रहे हैं कि आपकी सरकार इस बार भी बन गई तो संविधान बदल देंगे आप?

– मीनाक्षी जोशी

(इंडिया टीवी, एंकर)

उत्तर

पहली बात है, जहां तक संविधान का सवाल है, इस देश में संविधान के साथ सबसे पहले खिलवाड़ किसने किया। पंडित नेहरू, उन्होंने सबसे पहला संविधान में जो अमेंडमेंट किया वह फ्रीडम ऑफ स्पीच को रिस्ट्रिक्शन किया। अन डेमोक्रेटिक मूव था। प्रधानमंत्री जी की बेटी जो प्रधानमंत्री बनी, इंदिरा जी, उन्होंने कोर्ट के एक निर्णय को उलट दिया। उन्होंने इमरजेंसी लगा दी। अखबारों को ताले लगा दिए। सबको जेल में बंद कर दिय। संविधान का कि चूरे-चूरे उड़ा दिए उन्होंने और पूरे विश्व में हमारी बेइज्जती हुई। फिर उनके बेटे श्रीमान राजीव गांधी .प्रधानमंत्री बने, उन्होंने सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट शाह बानो का उसको उलट दिया। उन्होंने संविधान सुधार करके, कानून बदल करके, महिलाओं के अधिकार का विषय था, वोट बैंक की खातिर उसको नकार दिया। फिर उनके बेटे, शहजादे, सरकार और कैबिनेट उस संविधान की कोख से पैदा होती है। डॉक्टर मनमोहन सिंह जी संविधान के द्वारा बने हुए प्रधानमंत्री थे। डॉक्टर मनमोहन सिंह जी की कैबिनेट संविधान के द्वारा बनाई हुई कैबिनेट थी। उस कैबिनेट ने एक निर्णय किया, इन्होंने पत्रकार परिषद बुलाई। पत्रकारों के बीच बह कर के उस कैबिनेट के निर्णय के चूरे-चूरे करके फेंक दिया। ये चारों घटनाएं सबूत है कि वे संविधान के प्रति, पूरी तरह उसके दुश्मन है, संविधान को अपने मन मुताबिक उपयोग करते हैं। उनके लिए संविधान ना कोई भावना का विषय है ना कोई जिम्मेवारी का विषय है। ऐसे लोगों को संविधान की बात करना उनके मुंह में शोभा नहीं देती है। शब्द भी संविधान उनके मुंह से सुनता हूं, तो चैन मेरा खो जाता है, कि जिन्होंने यह बर्बाद कर दिया वो बता रहे हैं। हम हैं, बाबा साहब आंबेडकर का हम इतना गौरव गान करते हैं, संविधान सभा का इतना गौरव गान करते हैं। लेकिन ये बात स्वीकार करें 75 साल तक इस देश का संविधान पूरे देश में लागू नहीं हुआ था और यह उनकी गुनाहित कृत्य था। अगर आपको देश की जनता ने चुना है तो आपका जिम्मा है कि आप संविधान का लेटर एंड स्पिरिट में उसको लागू करें, जम्मू कश्मीर में संविधान नहीं लगता था, वहां संविधान अलग था। मेरी सरकार ने आ करके धारा 370 हटा करके संविधान के सही रूप में हिंदुस्तान के हर कोने में लेटर एंड स्पिरिट के साथ उसको लागू किया। संविधान का अगर कोई पुजारी है तो मोदी है। संविधान का कोई रक्षक है तो मोदी है। दूसरा, भारत की संविधान सभा ने लंबी चर्चा करने के बाद तय किया था कि धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं होगा और आज यह संविधान बदल करके धर्म के आधार पर आरक्षण करने की दिशा में जा रहे हैं। वे संविधान की पीठ में छुरा भोंक रहे हैं। संविधान निर्माताओं के साथ धोखा कर रहे हैं। बाबा साहब आंबेडकर का अपमान कर रहे हैं और इसलिए मैं लड़ाई लड़ रहा हूँ कि मैं संविधान की जो मूल भावना थी, संविधान सभा की मूल भावना थी, उसके खिलाफ होने वाले किसी भी प्रयास के खिलाफ, जी जान से लडूंगा और मैं संविधान की रक्षा के लिए समर्पित हूं।

प्रश्न – 4

अलग-अलग घाटों से हम होते हुए जा रहे हैं। 88 घाट हैं इस पूरी काशी नगरी में, नमामी गंगे प्रोजेक्ट के तहत आपकी ओर से बहुत ज्यादा काम करवाया गया और यहां पर घाटों की साफ सफाई अपने आप में लोगों को आकर्षित भी करती है। 2017 और 18 का जो काशी में आने वाले लोगों का आंकड़ा था वो तकरीबन 62 लाख था, 2022-23 में वो पहुंचकर 7 करोड़ हो गया है और काशी के लोग बताते हैं कि जब जब मोदी यहां आते हैं तब तब पर्यटकों की तादाद श्रद्धालुओं की तादाद बढ़ती चली जाती है। – चित्रा त्रिपाठी (आज तक, एंकर)

उत्तर

हमारे देश में दुर्भाग्य से भारत के सामर्थ्य को नकारा गया। इतना ही नहीं उसको एक प्रकार से नीचा दिखाने का भरपूर प्रयास हुआ। 140 करोड़ का देश, हर बेटे की इच्छा रहती है कि मैं, मेरे मां-बाप को गंगा स्नान कराऊंगा। मेरे मां-बाप को चार धाम यात्रा कराऊंगा। अब मैं अध्यात्म, भावुकता सब छोड़ दूं। लेकिन मैं कमर्शियल माइंड से सोचूं, फाइनेंसियल माइंड से सोचूं। 140 करोड़ का मार्केट जो गंगा जाना चाहता है, जो चारधाम जाना चाहता है, जो द्वादश ज्योतिर्लिंग जाना चाहता है, जो अष्ट गणेश की पूजा करना चाहता है, जो 51 शक्ति पीठ जाना चाहता है, इतना बड़ा और वही तो इस देश के मालिक हैं उन्हीं के तो टैक्स से देश चलता है। क्या उनको शुद्ध पानी नहीं मिलना चाहिए? उनको सफाई नहीं मिलनी चाहिए? क्या उनको टॉयलेट की सुविधा नहीं मिलनी चाहिए? उनको रात गुजारनी है, तो अच्छी व्यवस्था नहीं मिलनी चाहिए? उनको इंटरनेट कनेक्शन, कनेक्टिविटी नहीं मिलनी चाहिए? और मैं मानता हूं ये उनका हक है। क्योंकि ये धार्मिक स्थान है इसलिए मेरे देश के लोगों का हक मैं छीन लूं ये मुझे गवारा नहीं है। तो मैंने इसमें इकोनॉमी भी देखी है और इसमें मैंने भविष्य भी देखा है और जब आप अपनी चीजों को सम्मान करते हैं, गौरव करते हैं, तब जाकर के दुनिया करती है। और G-20 समिट में मैंने एक प्रयोग किया कि मैं G-20 को मोदी तक सीमित नहीं रखूंगा। मैं G-20 को दिल्ली तक सीमित नहीं रखूंगा। मैं G-20 को देश के अलग-अलग स्थानों पर 200 मीटिंग करके ले गया। और उसका परिणाम ये हुआ कि G-20 का काम तो हुआ लेकिन दुनिया को और सारे डिसीजन मेकिंग लोग आते थे यहां, करीब 1 लाख लोग आए थे। दुनिया के महत्त्वपूर्ण देशों के निर्णय प्रक्रिया के जो महत्व के लोग होते हैं करीब 1 लाख लोग आए थे। और उन 1 लाख लोगों ने ये सारा देश देखा। तो उनको जो बाहर के हैं उनको लगता है, अच्छा ये देश ऐसा है। इतनी विविधताओं से भरा हुआ है। तो मैंने मेरे देश का ब्रांडिंग करने के लिए भी G-20 का उपयोग किया। विश्व के कोई नेता आते हैं मैं उनसे गंगा आरती करवाता हूं। उसमें मुझे क्या? मैं इनका हिंदू करण नहीं कर रहा हूं। मैं उनको प्रकृति के प्रति हमारा प्यार क्या है। हम प्रकृति के प्रति कितने समर्पित हैं। हम प्रकृति से संघर्ष करने वाले लोग नहीं हैं, हम प्रकृति का विनाश करने वाले लोग नहीं हैं, हम प्रकृति का संरक्षण करने वाले लोग हैं। हम प्रकृति का संवर्धन करने वाले लोग हैं। और दुनिया जो ग्लोबल वार्मिंग की चिंता करती है ना, मैं गंगा आरती कराकर के उनको सिखाता हूं कि ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का समाधान प्रकृति के प्रति भक्ति में है।

प्रश्न – 5

विपक्ष कह रहा है कि आप महंगाई पर, बेरोजगारी पर, नौकरियों पर बोल नहीं रहे हैं, बोलने से बच रहे हैं, बोल रहे तो बहुत कम बोल रहे?

– हिमांशु मिश्रा
(आज तक, एंकर)

उत्तर

मैं बताता हूं, अब देखिए महंगाई, जब उनकी सरकार थी तो ढाई लाख में इनकम टैक्स भरना पड़ता था। आज 7 लाख तक इनकम टैक्स नहीं भरना पड़ता है। मतलब उसके हजारों रुपए इनकम टैक्स जो भरना पड़ता था तो बच रहे हैं। हम 5 लाख रुपये तक आरोग्य में मुफ्त इलाज करवाते हैं उसके कारण उसके सिर पर बोझ हट गया। सामान्य मानवी को दवाई का खर्चा बहुत होता है। आज जो दवाई बाजार में 100 रूपए में मिलती है वो हम बीस रुपए में देते हैं 10 रुपए में देते हैं, उसका बोझ कम हो रहा है। 80 करोड़ लोगों को मुफ्त में अनाज मिलता है। और दूसरा इस देश में महंगाई सबसे ज्यादा आजादी के बाद, श्रीमती इंदिरा गांधी के जमाने में थी। तीसरी बात मैं चाहूंगा आप जैसे लोग विद्वान, एक काम करें लाल किले पर से पंडित नेहरू के, श्रीमती गांधी के और राजीव गांधी के लाल किले से भाषण सुन लीजिए, हमारा बयान की जरूरत नहीं। आप हैरान हो जाएंगे, लाल किले पर से पंडित नेहरू यह भाषण कर रहे हैं कि देश में महंगाई बहुत बढ़ी है, आप चिंतित है, मैं भी चिंतित हूं, लेकिन आपको पता होना चाहिए कि नॉर्थ कोरिया-साउथ कोरिया की लड़ाई चल रही है इसलिए महंगाई बढ़ी है। उस जमाने में तो ग्लोबलाइजेशन था नहीं। नॉर्थ कोरिया साउथ कोरिया की लड़ाई का दुनिया की किसी इकॉनमी पर प्रभाव नहीं हो सकता था। लेकिन उस समय भी वह बहाना ढूंढते थे। आज तो, जहां लड़ाइयां चल रही है, वो सीधी सीधी दुनिया में फ्यूल, फर्टिलाइजर एंड फूड सीधा इंपैक्ट करने वाली लड़ाई का क्षेत्र है। इसके बावजूद भी पेट्रोल का दाम कंट्रोल में रखा हमने, उसके बावजूद भी हमने महंगाई बढ़ने नहीं दी। इन सारी कठिनाई के बाद भी हमारा यूरिया, वो भी युद्ध के क्षेत्र में है। दुनिया में यूरिया की बोरा 3000 रुपए में बिकता है, हिंदुस्तान के किसान को 300 रुपए में मिलता है। और इसलिए ये झूठ और नारेबाजी करते रहते हैं। जहां तक रोजगार का सवाल है। जब उनकी सरकार थी तब करीब सैकड़ों में स्टार्टअप्स

थे, आज सवा लाख-डेढ़ लाख स्टार्टअप्स हैं। और टियर टू टियर थ्री सिटी में भी है, एक स्टार्टअप एवरेज चार पांच नए लोगों को रोजगार देता है, इसको क्या कहेंगे। हमारी मुद्रा योजना क्योंकि हम चाहते हैं कि देश के नौजवान को जिसको नौकरी की संभावना है नौकरी मिले, रोजगार की संभावना रोजगार मिले, स्वरोजगार की संभावना है उसको स्व रोजगार के अवसर मिले। हमने मुद्रा योजना लाई, करीब 42 करोड़ लोन्स उसमें पास हुए हैं, करीब 28 लाख करोड़ रुपया, हो सकता है मेरा आकड़े इधर उधर हो, 25 से 28 लाख करोड़ रुपया उनको डिस्पर्स किया, बिना गारंटी। और इसमें 70 परसेंट से ज्यादा फर्स्ट टाइमर है। और हर व्यक्ति कम से कम दो लोगों को रोजगार देता है। दूसरा सरकार ने लाखों लोगों को रोजगार दिया है। दूसरा यह लोग जब राज्य के अंदर आंकड़े देते हैं तो कहते हैं कि हमने इतना रोजगार दिया तो ऐसा तो कैसे हो सकता है भाई एक राज्य में रोजगार मिला लेकिन देश में नहीं मिला, कोई राज्य देश के बाहर तो है नहीं, तो यह झूठ बता रहे हैं। उनके पास कोई मुद्दा नहीं है। लेकिन इसके बावजूद भी मैं कहता हूं कि देश में लगातार हमने रोजगार के लिए, स्वरोजगार के लिए, लगातार हम प्रयास कर रहे हैं। अच्छे प्रयास कर रहे हैं। लेकिन वह पुराने जमाने वाली चीजों से चीज बाहर आयीं, जैसे स्पोर्ट्स, एक ऐसा क्षेत्र खुल रहा है। महिलाएं, जैसे हम एक करोड़ लखपति दीदी बनाया। अब हम तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने जा रहे हैं, बिना काम तो होता नहीं है। रोड्स -हाईवे, पहले से डबल बन रहे हैं, तो कोई तो काम करता होगा। रेलवे, पहले से डबल बन रही है, कोई तो काम करता होगा। चार करोड़ घर बने, किसी ने तो काम किया होगा, किसी के तो जेब में पैसा आया होगा और इसलिए ये इतना झूठ नैरेटिव चला रहे हैं और दुर्भाग्य है कि जो बोलते हैं उनको कोई सवाल नहीं पूछता। उनको पूछो भाई आप बेरोजगार हो गए पॉलिटिकली, इसलिए सारी दुनिया को बेरोजगार क्यों कहते हो तुम।

प्रश्न – 6

फर्स्ट टाइम वोटर्स, यूथ वोटर आपका एक बहुत बड़ा सपोर्ट बेस रहा है जबकि विपक्ष को ये लगता है कि इस बार वो आपके साथ नहीं है उनको, उसपर आप क्या कहेंगे?

– सौरभ शर्मा
(इंडिया टीवी, एंकर)

उत्तर

देखिए फर्स्ट टाइम वोटर जो हैं वो पुरानी पीढ़ी वाला नहीं हैं जी, ये वर्तमान पीढ़ी है जो डिजिटल वर्ल्ड से जुड़ी हुई हैं वो बदलती हुई दुनिया देख रहा है, भारत का विश्व में जो स्थान बन रहा है वो देख रहा है, जब उसको पता चलता है गरीब का बच्चा भी फर्स्ट टाइम वोटर होगा उसको पता चलता है कि मैं अपनी मातृभाषा में पढ़ूंगा तब भी डॉक्टर बन सकता हूं, मैं अंग्रेजी स्कूल में नहीं पढ़ पाया मेरी मां मुझे नहीं भेज सकती, मेरे पिताजी के पास उतने पैसे नहीं हैं कि मैं अंग्रेजी पढ़ पाऊं अब तो मोदी जी मुझे डॉक्टर बना सकते हैं, मोदी जी मुझे इंजीनियर बना सकते हैं। गरीब का बच्चा भी सपनों को संकल्प बनते देख रहा है और सिद्धि तक जाने के लिए मोदी रोड में बनाकर के बैठा हुआ है जब देश का नौजवान पहले सैकड़ों में हमारे यहां स्टार्टअप थे आज एक लाख, डेढ़ लाख स्टार्टअप हैं, टियर वन, टियर टू, टियर थ्री सिटी में हैं, तब देश के नौजवान को लगता है येस यहां मेरा भाग्य है। हमारा देश एक आध गोल्ड मेडल मिल जाए तो हम मानते थे चलो भाई गोल्ड मेडल मिल गया। आज स्पोर्ट्स का एक कल्चर देश में डेवलप हुआ है, जिससे यूथ को लगता है हां मेरे पोटेंशियल को मैं बाहर ला सकता हूं और जब उसको सुनता है कि 2029 में हम यूथ ओलंपिक करना चाहते हैं, हम बीच ओलंपिक करना चाहते हैं, हम 2036 में ओलंपिक को यहां इनवाइट करना चाहते हैं तब उसको भरोसा है तो देश में बहुत बदलाव होगा।

प्रश्न – 7

फर्स्ट टाइम वोटर्स, यूथ वोटर आपका एक बहुत बड़ा सपोर्ट बेस रहा है जबकि विपक्ष को ये लगता है कि इस बार वो आपके साथ नहीं है उनको, उसपर आप क्या कहेंगे?

– अमिश देवगन (न्यूज़ 18 इंडिया, एंकर)

उत्तर

मेरे ऊपर कोई प्रेशर नहीं है। देश की जनता का प्यार यही मेरी बहुत बड़ी शक्ति है। देश की जनता के आशीर्वाद यही बहुत बड़ी पूंजी है और इसलिए प्रेशर मैं देख रहा हूं कि इंडी अलायंस में है क्योंकि उनकी इंडी अलायंस बन ही नहीं पा रहा है। आप बनते ही बनते देखिए केरल में जाके लेफ्ट उनका सबसे बड़ा साथी है। केरल में जाकर के ही उन्होंने उन पर छुरा घोंप दिया खुद चुनाव लड़ गए और मेरे पूरे चुनाव में सबसे तीखी आलोचना, सबसे तीखी भाषा, अगर मैंने कहीं सुनी है तो वो मैंने वायनाड में सुनी है, केरल में सुनी है, जहां कांग्रेस की इतने भद्दे तरीके से आलोचना हुई और कांग्रेस ने अपने इंडी अलायंस के साथी के खिलाफ इतनी भद्दी भाषा में बोला है।

प्रश्न – 8

इस बार चुनाव पर राम मंदिर का कितना असर मानते हैं? आपने ऐसा क्यों कहा कि राम मंदिर फैसले पर कांग्रेस शाहबानो केस जैसा रवैया अपना सकती है?

– नवनीत गुर्जर
(दैनिक भास्कर, नेशनल एडिटर)

उत्तर

कांग्रेस के परिवार के करीबी रह चुके एक पूर्व सलाहकार ने शहजादे की सोच को देश के सामने रखा है। राम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद उन्होंने मीटिंग की और अपनी मंशा जाहिर की। उनकी योजना राम मंदिर पर कोर्ट के फैसले को पलटने की है। जैसे उनके पिताजी ने शाहबानो केस में सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलटा था।

शहजादे के एक और सलाहकार अमेरिका में बैठकर भारत की संस्कृति और 140 करोड़ लोगों की भावना को समझने का दावा करते हैं। वो कहते हैं कि राम और रामनवमी भारत की मूल भावना के खिलाफ है। ये बयान पब्लिक डोमेन में हैं। इसमें कल्पना जैसा कुछ भी नहीं है। जब लोग इन बयानों को उनके व्यवहार से जोड़कर देखते हैं तो स्थिति और स्पष्ट हो जाती है।

इन लोगों ने राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा को ठुकरा दिया। उनकी पार्टी के जो लोग अयोध्या के राम मंदिर में दर्शन करने गए, उन पर कार्रवाई की। अपने वोट बैंक को खुश करने के लिए वो राम मंदिर से दूरी बनाए हुए हैं। राम 140 करोड़ भारतीयों की चेतना का अंश हैं। इसके विरुद्ध व्यवहार करने वालों को जनता जवाब देगी।

प्रश्न – 9

2047 की बात आप कर रहे हैं, ये सही है लेकिन पिछले पांच साल के बारे मे बताएं.

– लोकमत मीडिया ग्रुप

उत्तर

2019 में जब हमारी सरकार बनी, तो पहले 100 दिन दिनों में हमने कई महत्वपूर्ण फैसले लिए. जम्मू-कश्मीर में लागू धारा 370 को हटाया, यूएपीए जैसे कानून में संशोधन कर आतंकवाद विरोधी कानून को अधिक सक्षम बनाया, तीन तलाक विधेयक पारित कर इसे कानूनी रूप दिया, बैंकों की हालत सुधारने और उन्हें आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए बैंकों का विलीनीकरण किया, कई क्षेत्रों को सीधा विदेशी निवेश से जोड़ने के लिए आवश्यक संशोधन किए, छोटे निवेशकों को फंसाने वाली योजनाओं पर पाबंदी और इनके प्रवर्तकों को कठोर कानून के दायरे में लाया गया, कृषि उपज की एमएसपी (न्यूनतम गारंटी मूल्य) में बढ़ोतरी की गई, 'पीएम किसान योजना' पहले सिर्फ लघु व अल्प भूधारक किसानों तक के लिए सीमित थी, उसका दायरा बढ़ाकर सभी किसानों को इसमें शामिल किया गया, किसान तथा व्यापारियों के लिए पेंशन योजना शुरू की गई, जल शक्ति मंत्रालय स्थापित करने समेत कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए और उन्हें प्रभावी रूप से लागू किया.

प्रश्न – 10

प्रधानमंत्री जी, बंगाल के विषय पर संदेशखाली का जो विषय था जो वहां पर उत्पीड़न हुई थी, टॉर्चर किया गया था, मास रेप के एलिगेशन से पहली बार ये खबर रिपब्लिक बांगला ने दिखाई थी और उसके बाद हमने करीब एक महीने तक कैंपेन की थी न्याय के लिए। मेरा सवाल आपसे है कि आपको लगता है कि संदेशखाली एक तरह से केंद्र बिंदु नहीं एक प्रतीक बन गया है बंगाल की स्थिति को लेकर और इससे जुड़ा सवाल ये है कि विकसित भारत की बात करते हैं। इसके कांटेक्ट में क्या आपको लगता है विकसित बंगाल को आप कैसे देखते हैं?

– अर्नब गोस्वामी (रिपब्लिक भारत, एंकर)

उत्तर

एक तो मैंने, मेरा स्पष्ट मत है कि तमिलनाडु और बंगाल हजारों साल का हम इतिहास देखें तो कुछ ऐसी जगह है जिसने देश की बहुत बड़ी सेवा की है। देश का नेतृत्व किया है। संकट की घड़ियों में से देश को बाहर निकाला है। उसमें बंगाल और तमिलनाडु का बहुत बड़ा योगदान है। दुर्भाग्य से आज दोनों राजनीतिक नेतृत्व की विकृत मानसिकता के शिकार हो चुके हैं। अब बंगाल में जिस प्रकार से जिन मुद्दों को लेकर के बंगाल की मुख्यमंत्री संसद में आवाज उठाती थी जब वहां लेफ्ट की सरकार थी। आज उन्हीं मुद्दों को हम बोल रहे हैं और ममता जी वो कर रही हैं जो लेफ्ट वाले करते थे, कांग्रेस वाले करते थे और ये संवाया गुना करती है और उसमें क्रिमिनल एलिमेंट नया जुड़ गया है और आज जो संदेशखाली, एक छोटी सी घटना है जी। छोटी सी दिखती है घटना छोटी नहीं छोटी सी दिखती है, लेकिन पूरे बंगाल में तो भयंकर ज्वालामुखी है। कब विस्फोट होगा कहना कठिन है जी। हर जगह पर इस प्रकार का जुल्म है और सिर्फ उन्होंने अपनी वोट बैंक की राह, दूसरा वो कानून नियमों को पालन करने को तैयार नहीं है। टीचर्स भर्ती घोटाले में लोग, प्रूव हो जाता है लोगों की नौकरी चली जाती है। इनको परवाह नहीं है उनको तो लगता है राजनीति में हम देख लेंगे। करोड़ों-करोड़ों रुपए के नोटों के पहाड़ पकड़े जाते हैं, पैसे गिनते-गिनते मशीन थक जाते हैं लेकिन उनको उन लोगों से कोई परहेज नहीं है यानि उन्होंने एक न्यू नॉर्मल बना दिया है। देश के लिए संकट का विषय है। घटनाएं किसी न किसी राज में कुछ ना कुछ ऐसी चिंताजनक घटनाएं होती है लेकिन उसको कोई सर्टिफाई नहीं, हर कोई दुखी होते हैं रास्ता खोजते हैं। कि यार ऐसा नहीं होना चाहिए, हर यहां ऐसा नहीं है। जब साइकोलॉजिकली आप ये करोगे और तीन दशक लेफ्ट के और टीएमसी एक प्रकार से 50 साल बंगाल के बर्बाद हो चुके हैं जी। आज कोई इंडस्ट्री नहीं आ रही है वहां, कोई नया सिस्टम डेवलप नहीं हो रही है। राजनीति चलती रहेगी जी, लोग बेचारे मुसीबत में गुजारा करते रहेंगे। फिर इतना मेरा देश का इतना महान राज्य, इतना महान राज्य, इतनी महान कला, इतनी महान संस्कृति, हम सब गवा रहे हैं इसकी पीड़ा है जी।

प्रश्न – 11

कांग्रेस और विपक्ष कह रहा है कि भाजपा संविधान बदल देगी, आरक्षण खत्म कर देगी, आप भी कांग्रेस पर यही आरोप लगा रहे हैं। क्या जनता कंफ्यूज नहीं हो रही है?

– दैनिक जागरण

उत्तर

भारत का संविधान हमारे लिए पूज्य है। एक देश, एक विधान और एक संविधान तो हमारी पार्टी और सरकार की मूल भावना में है। हमारी सरकार ने संविधान दिवस मनाना शुरू किया। गुजरात का मुख्यमंत्री रहते हुए मैंने संविधान लागू होने के 60 वर्ष पूरे होने पर संविधान गौरव यात्रा निकाली थी। मैंने ये बात कई अवसरों पर कही है कि संविधान की वजह से ही आज मैं इस जगह पर पहुंचा हूं। देखिए, पिछले 10 वर्षों से हम प्रचंड बहुमत के साथ सरकार चला रहे हैं। विपक्ष के जो आरोप हैं उनका मूल्यांकन हमारे काम के आधार पर करना चाहिए। साथ ही, ये भी देखना चाहिए कि उन्होंने अपने कार्यकाल में क्या किया है? कांग्रेस ने हमेशा संविधान का अपमान किया है। 70 सालों तक कश्मीर में भारत का संविधान लागू नहीं होने दिया, इमरजेंसी लागू करके भारत के लोकतंत्र पर हमला किया। शाहबानो के मामले पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलटने के लिए कानून लेकर आए। एससी, एसटी आरक्षण के खिलाफ नेहरू ने मुख्यमंत्रियों को चिट्ठी लिखी थी। 90 के दशक से पहले ये मंडल कमीशन के सुझावों को लागू करने से बचते रहे। 90 के बाद उनकी सरकार ने कई बार धर्म के आधार पर आरक्षण में सेंधमारी की कोशिश की। इन्होंने आंध्र प्रदेश में मुस्लिम आरक्षण को लागू करने की कोशिश की पर कोर्ट ने उसे रद्द कर दिया था। अब वही काम वो कर्नाटक में कर रहे हैं। कांग्रेस ने एससी-एसटी-ओबीसी के आरक्षण में से कोटा अपने वोटबैंक को देना तय किया है, इसके लिए कांग्रेस पार्टी संविधान बदलना चाहती है। ये मीडिया का काम है कि जनता को पार्टियों के काम के बारे में, उनके ट्रैक रिकॉर्ड के बारे में बताए जिससे जनता कनफ्यूज ना हो। मोदी गारंटी दे रहा है कि एससी-एसटी-ओबीसी और सामान्य वर्ग के जो गरीब लोग हैं, उनका जो आरक्षण संविधान के तहत मिला है, उसमें रत्ती भर भी हाथ नहीं लगाने दिया जाएगा।

प्रश्न – 12

प्रधानमंत्री जी, इसमें कोई दो राय नहीं कि आपकी किसी योजना में हिंदू-मुसलमान नहीं है। घर मिलना है, गरीब को मिलना है, वो गरीब कोई भी हो सकता है, लेकिन 2002 से आज 2024 हो गया। हम और आप किसी सामान को खरीदने जाएंगे तो दो साल 3 साल के बाद नहीं खरीदेंगे कुछ नया ट्राई कर लेंगे। 22 साल से यही नैरेटिव कैसे मुसलमान बार-बार खरीद ले रहा है या मान ले रहा है कि मोदी आएंगे तो मुसलमान को खत्म कर देंगे?

– सुशांत सिन्हा
(टाइम्स नाउ, एंकर)

उत्तर

देखिए, मैं करीब-करीब 25 साल हो गए मुझे, हेड ऑफ गवर्नमेंट के नाते और गुजरात में आपको मालूम होगा शायद 18वीं शताब्दी या 19वीं शताब्दी से रिकॉर्ड अवेलेबल है दंगे गुजरात में होते थे, 10 साल में 7 साल दंगे होते थे, 2002 के बाद गुजरात में एक भी दंगा नहीं हुआ है। गुजरात में मुसलमान जो हैं, वो आज बीजेपी को वोट दें न दें, दूसरा मैं आज पहली बार कह रहा हूं मैं कभी पहले भी इन विषयों पर नहीं आया। मैं मुस्लिम समाज को कह रहा हूं। उनके पढ़े-लिखे लोगों को कहता हूं कि आत्ममंथन करिए। सोचिए देश इतना आगे बढ़ रहा है अगर कमी आपके समाज में महसूस होती है तो क्या कारण है। सरकार की व्यवस्थाओं का बेनिफिट कांग्रेस के जमाने में आपको क्यों नहीं मिला? क्या कांग्रेस के कालखंड में आप इस दुर्दशा के शिकार हुए हो क्या? आत्ममंथन कीजिए और एक बार तय कीजिए। ये आपके मन में जो है कि सत्ता पे हम बिठाएंगे, हम उतारेंगे, उसमें आप अपने बच्चों का भविष्य खराब कर रहे हो। मुसलमान समाज दुनिया में बदल रहा है जी, आज मैं गल्फ के देशों में जाता हूं, इतना सम्मान व्यक्तिगत रूप से मुझे मिलता है और भारत को भी मिलता है। उन सबको लगता है हमारे यहां विरोध हो रहा है, सऊदी अरबिया में योगा ऑफिशियल सिलेबस का सब्जेक्ट है। यहां मैं योगा की बात करूं तो आप चला देंगे एंटी मुस्लिम है। मैं गल्फ के देशों में जाता हूं ये सारे अमीर लोग जो हैं मेरे साथ बैठते होंगे, लंच या डिनर में जरूर मुझे योगा के विषय में पूछते हैं कि मोदी जी का स्पेशल ऑफिशल ट्रेनिंग लेना है तो क्या करना, कैसे करना है। कोई कहता है- मेरी पत्नी इंडिया जाती है योगा सीखने। साल भर, एक महीना तो वो लोग वहीं रहती है, अमीर की पत्नियां कहती हैं, उनके परिवार जन आते हैं। अब यहां उसको हिंदू-मुसलमान बना दिया योगा को भी, अब ये जो कर रहे हैं मैं मुसलमान समाज से आग्रह पूर्वक कहता हूं, कम से कम अपने बच्चों की जिंदगी को तो सोचो, अपना भविष्य तो सोचो। मैं नहीं चाहता हूं कोई समाज बंधुआ मजदूर की तरह जिंदगी जिये। क्योंकि कोई डरा रहा है, क्योंकि कोई डरा रहा है, दूसरा अगर आप बैठना-उठना शुरू करोगे, भाजपा वाले आपको डर वाले लगते हैं, अरे जाओ ना 50 लोग बैठ कर भाजपा कार्यालय में एक दिन बैठे रहो। निकाल देंगे क्या आपको, अब देखिये क्या चल रहा है, कौन निकाल देगा आपको, कब्जा करो न जाकर बीजेपी कार्यालय में कौन रोकता है आपको।

प्रश्न – 13

प्रधानमंत्री जी, एक चीज को लेकर बड़ा भ्रम है और वह भ्रम यह है कि विपक्ष आरोप लगाता है कि अगर बीजेपी 400 सीट लेकर आई तो संविधान बदल देगी। इस देश में पहले भी 400 सीट लेकर पार्टी आई है। देश में पहले भी संविधान में 100 से ज्यादा संशोधन हो चुके हैं। इन बयानों पर आप क्या कहेंगे?

– टीवी – 9

उत्तर

पहली बात ये है कि आज हमारे पास कितनी सीटें हैं। आज भी एनडीए के पास करीब-करीब 360 सीटें हैं और एनडीए के सिवाय जैसे बीजेडी एनडीए में नहीं है तो उन सबको मिला लें तो आज भी हम करीब-करीब 400 सीट के साथ ही बैठे हुए हैं पार्लियामेंट में। पिछले 5 साल से बैठे हुए हैं। अगर ऐसा कोई पाप किसी को करना होता तो उसी समय कर लेता। तो ये तर्क भी नहीं है, सत्य भी नहीं है लेकिन ये क्यों करते हैं क्योंकि उनके पास उनका इतिहास देख लीजिए साहब, जो पार्टी कांग्रेस पार्टी के संविधान की पवित्रता को नहीं मानती है। वह पार्टी देश के संविधान को कैसे मानेगी। कांग्रेस पार्टी के संविधान की पवित्रता को नष्ट करने का काम इस परिवार ने किया है। उन्होंने संविधान की मर्यादाओं को तोड़ा है कांग्रेस पार्टी ने ऑफिशियली राष्ट्रपति के उम्मीदवार तय किए थे संजीव रेड्डी जी को। और उनकी पीठ में छुरा घोंप कर उनको हरा दिया गया था। ये इनका खेल है। इन्होंने संविधान के साथ हमेशा खिलवाड़ किया। नेहरू जी इतने बड़े लोकतंत्र का चेहरा कहते हैं ना आपलोग। पार्लियामेंट में बैठने के सबसे पहला जो संविधान संशोधन किया वह उन्होंने फ्रीडम ऑफ स्पीच को रिस्ट्रिक्ट करने के लिए किया था। पूरी तरह अन डेमोक्रेटिक नेहरू जी ने किया था। दूसरा उन्होंने कैसे किया, भारत का संविधान इसमें मैं तीन बातें मोटी-मोटी देखता हूं। एक तो बहुत ही अनुभवी लोगों ने बैठ कर के, भारत की जड़ों को जानने वाले लोगों ने बैठ कर के संविधान को बनाया। उसमें वो सुगंध है भारत के सोच, इसलिए उसको एक सामाजिक दस्तावेज भी कहा जाता है। वह सुगंध है। दूसरा ये लोग आगे का सोचते थे तो उसमें एक फ्यूचरिस्टिक देश आगे अच्छा चले, इसकी व्यवस्था भी है और तीसरा जो शब्दों में नहीं है लेकिन पेंटिंग में है। पहला संविधान बना, उसके हर पेज पर एक पेंटिंग है, वह पेंटिंग हमें हजारों साल के साथ जोड़ने वाली एक लिंक है, कड़ी है। हमारी संस्कृति, हमारी परंपरा, हमारा इतिहास, हमारी मान्यताएं वह सब उन चित्रों में अंकित है चित्रों में ताकि जल्दी देश समझ पाए। लंबा इतिहास लिखना ना पड़े वो चित्रों में रखा गया। शब्दों में वर्तमान और आने वाली कल रखी गई। तो कल, आज और कल इसका एक

बहुत ही संतुलित दस्तावेज, अत्यंत पवित्र दस्तावेज हमारा संविधान है। इन्होंने सबसे पहले संविधान की मूल प्रति में जितनी ये जो महान ऐतिहासिक सांस्कृतिक परंपरा वाला भाव था उसको नष्ट कर दिया। नए प्रिंट में को निकाल दिया उसके बाद एक भी संविधान की प्रति उस वाली प्रिंट नहीं हुई। हमने अभी जब पार्लियामेंट का उद्घाटन किया तो ओरिजिनल की प्रति प्रिंट करके हमने देश के एमपीओ को दी क्योंकि उसके मेरे मन में था। जैसे मैंने सेंगोल रखा पार्लियामेंट में, मैंने संविधान की भी ओरिजिनल प्रति की प्रिंट छपवा के दी।

दूसरा इन्होंने क्या किया, हमारी न्यायालय, संविधान ने जन्म दिया है, शाहबानों का केस है, सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय किया था, वोट बैंक के लिए संविधान को समर्पित कर दिया। सुप्रीम कोर्ट जो कि संविधान की एक बहुत बड़ी इकाई है उसकी भावना को नष्ट करके उन्होंने संविधान बदल दिया। इलाहाबाद कोर्ट ने जजमेंट दिया था उनके चुनाव को रद्द किया था। उन्होंने संविधान को कूड़े कचरे में डाल दिया, इमरजेंसी डाल दी, हिंदुस्तान को जेलखाने में बंद कर दिया। उन्होंने संविधान का उपयोग सिर्फ और सिर्फ अपने एकाधिकार के लिए किया। देश की सरकारों को 356 का उपयोग करके 100 बार, 100 बार उसको खत्म किया इन्होंने। और एक प्रधानमंत्री ने अकेले ने 50 बार किया और इन्हीं के परिवार ने की। तो संविधान को पूरी तरह नष्ट करना यह उनकी पूरी पावर के लिए, और दूसरा अपीजमेंट पॉलिटिक्स के लिए। एक पावर के लिए दूसरा अपीजमेंट पॉलिटिक्स के लिए। एक तो सत्ता के लिए संविधान का उपयोग किया दूसरा वोट बैंक पॉलिटिक्स के लिए किया। मेरे मन में तो सवाल है जी और मैं तो मीडिया के लोगों को कहता हूं खोजिए क्या वायनाड में सौदा हुआ है क्या? मेरे मन में क्वेश्चन है क्या वायनाड में सौदा हुआ है क्या कि आपको मुसलमानों को रिजर्वेशन में हिस्सा दिया जाएगा बदले में वायनाड जिताओ। क्या ऐसा सौदा हुआ है क्या? बदले में देश में चुनाव जिताओ क्या ऐसा सौदा हुआ है क्या? देश जानना चाहता है। और आज खेल क्या चल रहा है, आज खेल ये चल रहा है एससी, एसटी, ओबीसी के जो संविधान में आरक्षण मिला हुआ है उस आरक्षण को छीनने का तरीका ढूंढा जा रहा है और वो धर्म के आधार पर आरक्षण देना चाहते हैं। जब संविधान बना महीनों तक चर्चा हुई, देश के विद्वानों ने चर्चा की कि धर्म के आधार पर आरक्षण दे सकते हैं क्या और सबमें सहमति बनी कि धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं दे सकते हैं। और बाबा साहब आंबेडकर का तो बड़ा विद्वतापूर्ण उसमें बयान है। सबने बहुत सुविचारित मत रहा है देश में कि हमारे देश में धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं देना चाहिए। ये धर्म के आधार पर आरक्षण देने पर टूटे, क्यों? वोट बैंक पॉलिटिक्स। कर्नाटका ने तो एक नया प्रयोग किया। कर्नाटका ने क्या किया, उन्होंने रातों रात सभी मुस्लिम जातियों को फतवा निकाल कर ओबीसी बना दी। एक सर्कुलर निकाल दिया, ठप्पा मार दिया।

तो जो 27 परसेंट ओबीसी का आरक्षण था उसके सबसे बड़े हिस्सेदार ये बन गए। उनका लूट लिया, डाका डाल दिया। तो इनके लिए संविधान ये एक खेल है। क्या इस देश में 75 साल में भारत का संविधान लागू हुआ था क्या? जो लोग कह रहे हैं न, बेईमानी कर रहे हैं। 60 साल तक इन्होंने राज किया, कश्मीर में भारत का संविधान नहीं लागू होता था। अगर संविधान की इतनी ही आपको पवित्रता लगती थी तो कश्मीर में संविधान क्यों लागू नहीं किया आपने। 370 की दीवार बना करके भारत के संविधान को यहां तक क्यों अटका दिया आपने। यह बाबा साहब

का अंबेडकर का अपमान है कि नहीं है। दूसरा जम्मू-कश्मीर में जो मेरे दलित भाई-बहन हैं, इनको 75 साल तक आरक्षण का अधिकार नहीं मिला है जी, कोई अधिकार नहीं मिला है। तो इनको रोना क्यों नहीं आया भाई। वहां पर हमारे आदिवासी भाई-बहन हैं उनको कोई अधिकार नहीं मिला। क्यों रोना नहीं आया। हमारी माताएं-बहनें हैं वहां उनको कोई अधिकार नहीं मिला। क्यों, संविधान था ही नहीं वहां, उनका संविधान चलता था।

मैंने संविधान की सबसे बड़ी सेवा की है कि 370 हटा कर के जम्मू-कश्मीर में भारत का संविधान लागू किया। संविधान के प्रति मेरा समर्पण देखिए, जब भारत के संविधान के 60 साल हुए तब मैंने गुजरात में हाथी के ऊपर संविधान की बड़ी प्रति रखी और उसकी पूजा की और उसका बहुत बड़ा जुलूस निकाला और हाथी पर सिर्फ संविधान था और राज्य का मुख्यमंत्री पैदल चल रहा था वहां। क्यों, मैं देशवासियों के दिल में संविधान की प्रतिष्ठा बनाना चाहता था। जब हम पार्लियामेंट में आए तो हमने संविधान दिवस मनाने का प्रस्ताव लाए। कांग्रेस पार्टी ने विरोध किया और कांग्रेस पार्टी के नेता जो आज कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष हैं, उन्होंने बयान दिया पार्लियामेंट में कि 26 जनवरी तो है, संविधान दिवस की क्या जरूरत है। मेरे लिए संविधान हर स्कूल में चर्चा का विषय होना चाहिए। हर बच्चे के दिल में संविधान की पवित्रता की चर्चा। ये वकीलों के लिए अदालत में धाराएं कोट करने के लिए संविधान नहीं है। संविधान हमारी जीवन की प्रेरणा बनना चाहिए। नई पीढ़ी को शिक्षा मिलनी चाहिए। और मैं देशवासियों को कहता हूं मेरी तीसरी टर्म में मेरे जो पहले 100 दिन के कार्यक्रम हैं ना। आज मैं एक पत्ता खोल देता हूं, पहले 100 दिन में मेरा एक काम यह रहेगा कि संविधान के 75 साल को, सालभर ऐसे मनाऊंगा अब तो क्योंकि इतना झूठ बोल रहे हैं लोग, ताकि देश संविधान की पवित्रता को समझे, संविधान के महात्म्य को समझे। हां मैं संविधान में जितना अधिकार की चर्चा होती है, मैं कर्तव्य की भी उतनी चर्चा करना चाहता हूं। क्योंकि देश में कर्तव्य भाव भी जगाना चाहिए। तो मैं संविधान में अधिकार के साथ-साथ कर्तव्य भाव को बल देने वाली बात आने वाले एक साल देश में जमकर के चलाने वाला हूं।

प्रश्न – 14

जैसे-जैसे भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार बढ़ता जा रहा है, समानता और असमानता के बारे में चर्चा हो रही है। आपको लगता है कि संपत्ति कर और विरासत कर समाधान के तौर पर नहीं हैं!

– टाइम्स ऑफ़ इंडिया

उत्तर

मुझे नहीं लगता कि ये किसी भी तरह से समाधान हैं। ये वास्तव में समाधान के रूप में छिपी हुई खतरनाक समस्याएं हैं। अगर सरकार पुनर्वितरण के नाम पर आपका पैसा छीन लेगी तो क्या आप दिन-रात काम करेंगे? आज हम 3 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनने के लिए सशक्त बना रहे हैं। ऐसी नीतियों से यह सुनिश्चित होगा कि महिलाएं लखपति न बनें और उनकी आकांक्षाएं आगे न बढ़ें। अगर किसी ने मुद्रा लोन लिया है और वह आगे बढ़ रहा है, तो उसका विकास रुक जाएगा। हमारे स्ट्रीट वेंडर जो अब हमारी नीतियों के कारण आगे बढ़ रहे हैं, वे भी आगे नहीं बढ़ पाएंगे। आज हम दुनिया में तीसरे सबसे बड़े स्टार्टअप इकोसिस्टम हैं। ऐसी नीतियां हमारे युवाओं द्वारा स्टार्टअप क्रांति को खत्म कर देंगी। यह नीति उनके वोट बैंक को खुश करने का एक तरीका है।

अगर हम वाकई लोगों की तरक्की सुनिश्चित करना चाहते हैं, तो हमें बस बाधाओं को दूर करने और उन्हें सशक्त बनाने की जरूरत है। इससे उनकी उद्यमशीलता की क्षमता को बढ़ावा मिलता है, जैसा कि हमने अपने देश में देखा है; यहां तक कि टियर 2 और 3 शहरों में भी, जहां बहुत सारे स्टार्टअप और स्पोर्ट्स स्टार उभर रहे हैं। यही कारण हैं कि धन पुनर्वितरण, धन कर आदि कभी सफल नहीं हुए: उन्होंने कभी गरीबी को नहीं हटाया, उन्होंने इसे बस इस तरह वितरित किया कि हर कोई समान रूप से गरीब हो। गरीब गरीबी से त्रस्त रहते हैं, धन सृजन रुक जाता है और गरीबी एक समान हो जाती है। ये नीतियां कलह पैदा करती हैं और समानता के हर रास्ते को अवरुद्ध करती हैं, वे नफरत पैदा करती हैं और एक राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने को अस्थिर करती हैं।

प्रश्न – 15

2014 और 2019 में बहुत डिसाइसिव विक्ट्री मिली आपको। फिर से आप वही बात कर रहे हैं कि डिसाइसिव विक्ट्री इस बार बहुत जरूरी है और आप उसमें इंडिया की ग्रोथ स्टोरी की बात करते हैं। ग्रोथ स्टोरी और डिसाइसिव विक्ट्री का क्या मेल है?

– एशियानेट न्यूज़

उत्तर

देखिए पहली बात है कि लोकतंत्र में मैं तो चाहूंगा हर एक राजनीतिक दल में ये एस्पिरेशन होना चाहिए कि भाई हम चुनाव लड़े, लोगों का विश्वास जीते और सत्ता में आकर के हमारे जो उसूल हैं, हमारे जो रूल्स है जो भी अपने सपने हैं उसको लागू करने का प्रयास करें। तो किसी भी राजनीतिक दल में अगर यह महत्वाकांक्षा ही नहीं है तो तो फिर लोकतंत्र के लिए ही ठीक नहीं है। लोकतंत्र की आवश्यकता है कि सभी राजनीतिक दल जो भी है इनके मन में भाव रहना चाहिए कि भई कभी ना कभी सत्ता में आकर के अपने विचारों के आधार पर देश की सेवा करेंगे। ये लोकतंत्र की आवश्यकता होती है। जहां तक बीजेपी का सवाल है, देखिए 2014 में जब हम आए थे तब पांच-छह दशक का कांग्रेस को राज करने का अवसर मिला और शायद उनको कोई विपक्ष जैसा कुछ था ही नहीं। इतना मीडिया भी नहीं था और ना इतनी मीडिया में वाइब्रेंसी थी यानि एक प्रकार से उनके लिए ऐसा खुला मैदान था और देश भी उनके साथ था क्योंकि आजादी के आंदोलन के बाद जो भाव थे वो जो चाहते वो देश कर लेता। लेकिन वो मौका गंवा दिया और धीरे धीरे धीरे डिटरोरिएशन पर आया। और उस परिस्थिति में 2013 में जबकि मेरे पर एक आरोप था, इस आदमी को हिंदुस्तान का क्या पता है, इस आदमी को दुनिया का क्या पता है। यह सारे नकारात्मक मुद्दे होने के बावजूद भी लोगों ने हमें सेवा करने का अवसर दिया है। और मैं कह सकता हूं कि 2014 वो उम्मीद का कालखंड था लोगों के दिल में भी उम्मीद थी और मेरे मन में भी उम्मीद थी कि हम उनकी उम्मीदों को पूरा करें। और 5 साल में सरकार चलाना मतलब मैं शासन नहीं करता हूं मैं सेवा करता हूं। सरकार चलाने का मतलब मैं पद पर बैठ कर के मौज करने के पक्ष में नहीं हूं। मैं एक सामान्य नागरिक से भी ज्यादा मेहनत करने का प्रयास करता हूं। लोगों के लिए लोगों ने बड़े निकट से हमारी सरकार के कामों को देखा। 2014 में उम्मीद का वातावरण था, 2019

में एक प्रकार से विश्वास में पलट गया। जन सामान्य का इतना विश्वास उसने मेरे भीतर एक नया आत्मविश्वास भर दिया। मुझे लगा कि हम सही दिशा में है हम सबके लिए जो काम करने का सबका साथ सबका विकास सबका प्रयास का मंत्र लेकर चले उसको जमीन पर हम उतार पाए हैं और उसका परिणाम ये आया कि 2019 का कालखंड एक विश्वास का कालखंड रहा और आज जब मैं 2024 में देशवासियों के पास गया हूं तो मेरा 13-14 साल का एक राज्य के मुख्यमंत्री नाते अनुभव 10 साल का प्रधानमंत्री के नाते अनुभव और इसमें किए हुए कामों के आधार पर मैं कह सकता हूं कि मैं इस बार गारंटी लेकर गया हूं। यानि कभी उम्मीद फिर विश्वास और अब गारंटी। और जब गारंटी होती है ना तो बहुत बड़ी जिम्मेवारी होती है। और मुझे लगता है कि आज दुनिया में जो भारत का के प्रति भरोसा बना है। आखिर विश्व ने हिंदुस्तान ने 30 साल तक अस्थिर सरकारों को देखा है। अस्थिर सरकारों ने देश का बहुत नुकसान किया है। विश्व में भी भारत का पूरी तरह देखने का नजरिया बहुत ही एक प्रकार से कोई वैल्यू ही नहीं था। लेकिन स्थिर सरकार क्या कर सकती है वह देश के मतदाताओं ने देखा है और इसलिए मुझे लगता है कि 2024 यह चुनाव मोदी नहीं लड़ रहा है, बीजेपी नहीं लड़ रही है। देश की जनता का इनिशिएटिव है देश की जनता साल के अनुभव के आधार पर निर्णय कर चुकी है और इसलिए यह चुनाव का उस अर्थ में अत्यंत महत्व है।

प्रश्न – 16

आपने कई भाषणों में कहा है कि 2024 आपका लक्ष्य नहीं है, 2047 है। 2047 तक क्या होने वाला है और क्या यह चुनाव सिर्फ औपचारिकता है?

– स्मिता प्रकाश
(एएनआई, एंकर)

उत्तर

मेरा मानना है कि 2047 और 2024 दोनों को मिलाना नहीं चाहिए। दोनों दो अलग चीजें हैं। मैंने इसे शुरू से ही, एक या दो साल पहले ही लोगों के सामने रख दिया था। और मैं कहता था कि 2047 में हम देश की आजादी के 100 साल मनाएंगे। स्वाभाविक रूप से, ऐसे ऐतिहासिक अवसर पर एक नया उत्साह जाग्रत होता है और नए संकल्पों का जन्म होता है।

इसी दृष्टिकोण से, मेरा दृढ़ मत था कि एक अवसर मौजूद है। हम स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं और 100 वर्ष की ओर अग्रसर हैं। आगामी 25 वर्षों का सदुपयोग कैसे किया जाए, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। प्रत्येक संस्थान में, प्रत्येक व्यक्ति के समक्ष एक लक्ष्य होना चाहिए। मैं अपने गांव का मुखिया हूं और मैं यह संकल्प लेता हूं कि सन् 2047 तक अपने गांव में यह सब कुछ हासिल करूंगा।

मैं हाल ही में RBI के समारोह में गया था, जहां उन्होंने अपने 90 साल पूरे होने का उल्लास मनाया, तो मैंने कहा कि अगले 10 साल बहुत महत्वपूर्ण हैं। आप 100 वर्ष पूरे कर लेंगे। इसके बारे में अभी से सोचें। तो, मेरे विचार से, 2047 भारत की स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ है। और देश में प्रेरणा जगनी चाहिए। और आज़ादी की 100वीं सालगिरह अपने आप में एक बहुत बड़ी प्रेरणा है। तो, वह एक हिस्सा है।

दूसरा है 2024, 2024 हमारे चुनाव का वर्ष है। और मेरा मानना है कि चुनाव पूरी तरह से अलग चीजें हैं। एक तरफ, जैसा कि आप इस चुनाव में देख रहे हैं, लोकतंत्र में चुनावों को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। और इसलिए, मुझे लगता है कि इसे एक आयोजन के रूप में मनाया जाना चाहिए। उससे, खेल की तरह, जब खेल उत्सव

और खेल आयोजन होते हैं, तो वे एक खेल भावना पैदा करते हैं। जब कोई खेल होता है तो दर्शक, खिलाड़ी खेल भावना का माहौल बनाते हैं। जो हमारी संस्कृति बन जाती है। चुनाव के इस माहौल को अगर हम एक उत्सव बना दें, एक फेस्टिवल बना दें, तो ये लोकतंत्र की आने वाली पीढ़ियों की रगों में, हमारी रगों में एक संस्कृति बन जाता है। और लोकतंत्र के लिए ये बहुत जरूरी है कि लोकतंत्र सिर्फ संविधान की सीमाओं में न रहे। यह हमारे खून में होना चाहिए।यह हमारी संस्कृति में होना चाहिए और मैं इसी अर्थ में 2024 को देखता हूं।

यह सच है कि मेरा 25 साल का सपना है और मैंने उस पर काफी काम किया है। और ऐसा नहीं है कि मैं यह आज कर रहा हूं। शायद जब मैं गुजरात में था तो इसी दिशा में सोचता था। अब 2024 के चुनाव पर नजर डालें। देश के सामने एक अवसर है कि एक ओर कांग्रेस शासन का और दूसरी ओर भाजपा शासन का मॉडल है। उन्होंने पांच-छह दशक तक काम किया है। मैं उनके लिए बहुत जगह छोड़ता हूं। उन्होंने 5-6 दशक काम किया है, और मैंने केवल 10 साल काम किया है। किसी भी क्षेत्र में तुलना करें, भले ही कुछ कमियां हों, हमारे प्रयासों में कोई कमी नहीं रही होगी।

दूसरे, 10 वर्षों में, कम से कम 2 वर्ष हमने COVID की लड़ाई में गंवा दिए और इसके कई दुष्परिणाम भी हुए। फिर भी आज अगर हम स्पीड और स्केल की दृष्टि से देश की तुलना करें, सर्वसमावेशी विकास की बात करें तो कांग्रेस के मॉडल की तुलना में हमने काफी बेहतर किया है। हां, मुझे गति अभी और बढ़ानी है। अगले टर्म में मुझे स्पीड के साथ-साथ स्केल भी बढ़ाना है। यही मेरा लक्ष्य है। दूसरी बात, आप देखेंगे कि जब देश की जनता देश को चलाने की जिम्मेदारी देती है, तो हमें देश और देश की जनता पर एकनिष्ठ ध्यान देना चाहिए।

दुर्भाग्य से, अतीत की राजनीतिक संस्कृति इस बात पर केंद्रित थी कि परिवार को कैसे मजबूत बनाया जाए और किसी को भी परिवार की जड़ें छीनने न दी जाएं। वहीं, मैं देश को मजबूत बनाने के लक्ष्य के साथ काम कर रहा हूं। मेरी सरकार उस लक्ष्य की दिशा में काम कर रही है। और जब देश मजबूत होता है तो उसका लाभ सभी को होता है। जहां कुछ हो रहा है, हम मेहनत कर रहे हैं, ईमानदारी से कर रहे हैं, इन बातों का प्रभाव पड़ता है। तो 2024 का चुनाव है तो हम अपना ट्रैक रिकॉर्ड लेकर आए हैं और वो अपना ट्रैक रिकॉर्ड लेकर आए हैं।

Dr. Syama Prasad Mookerjee
Research Foundation

Dr. Syama Prasad Mookerjee

Research Foundation

9, Ashoka Road, New Delhi- 110001

Web :- www.spmrf.org, E-Mail: office@spmrf.org,

Phone: 011-69047014

@spmrfoundation